ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

भारतीय संस्कृति और कला

[1]डा0 दीपाली श्रीवास्तव
[1]सह प्रोफेसर, (संगीत विभाग) महिला महाविद्यालय पी0जी0 कालेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

कला और संस्कृति का आपसी रिश्ता काफी गहरा है। कला संस्कृति की प्रवक्ता होती है। कला के माध्यम से ही संस्कृति हमारे जीवन मे अभिव्यक्ति पाती है। कला अपने संस्कृतिक सरोकारो के साथ आगे बढती है। उसको अभिव्यक्ति कला के विविध रूपो (संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, स्थापत्यकला, सिनेमा, फोटोग्राफी, साहित्य आदि मे जीवंत होती है। संस्कृति किसी भी समाज की परम्परा से मिली भैतिक व अभैतिक विरासत का नाम है। कला, संस्कृति अपनी अभिव्यक्ति पाती है। अतः हम कला रूप संस्कृति को इसी रूप मे देखते है। भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश रहा है। जिसकी कीर्ति आज भी सारे विश्व मे अपनी संपूर्ण आभा के साथ विद्यमान है। भारत की वैभवशाली सांस्कृतिक एवं कला विरासत को सहेजनें के साथ साथ आम जनमानस तक इसे सही स्वरूप में पहुंचाने का भी काम पूरी तत्परता और लगन के साथ किया जाता है।

शब्द संक्षेप– भारतीय संस्कृति, कला, अभिव्यक्ति, संस्कृतिक सरोकार एवं सांस्कृतिक विरासत।

Introduction

किसी भी देश बथ्वा जाति की संस्कृति उसकी शताब्दियो की अर्जित आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, दार्शनिक अत्यादि की परम्परागत उपलब्धियों का भण्डार है। संस्कृति प्रत्येक जाति या देश का भण्डार है। संस्कृति प्रत्येक जाति या देश की वादी स्वर है। मनुष्य शैशव अवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक अपने देश की संस्कृति द्वारा ही शिक्षित, पोषित और और प्रभावित होता है। संस्कृति ज्ञान भाव और कर्म का सामंजस्य है। संस्कृति विलासिता के लिए नही होती, उसका मुख्य परिधान है – जीवन का विकास। संस्कृति ही एक ऐसी उपलब्धि है। जो भूय, भवत् और भविष्य को एक सूत्र मे ग्रथित करती है। संस्कृति मानव जीवन की चाभी है। संस्कृति के कुछ तत्व सार्वभैमिक है, किन्तु प्रत्येक देश की संस्कृति मे कुछ तत्वो का प्राधान्य होता है।

टालस्य के अनुसार–

‘‘कला समभाव प्रचार द्वारा विश्व को करने का साधक है। 1

भारतीय संस्कृति मे वैदिक, तांत्रिक, श्रवण तथा मुस्लिम सम्प्रदाय का भी अंश दान रहा है। भारतीय संस्कृति का मुख्य स्वर आध्यात्मिक रहा है। इस संस्कृति मे ललित कलाओं का कितना प्रभाव है, यह जानने के लिये कला क्या है? इस पर विचार करेगे।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

कला का विकास – गोधे के मतानुसार – "कला आत्मा का जादू है। 2

पहले हम कला का तात्पर्य को समझने की चेष्ठा करेगे। कला के विषय मे एक मत यह है कि कला महत्वपूर्ण रूप है और इसके मुख्य प्रतिपादक क्वाइव वेल है। महत्वपूर्ण रूप का सृजन एक विशेष अवलोकन शक्ति, एक विशेष दृष्टि का कार्य है। हम सभी एक भूदृश्य को देखते है, किन्तु हम लोग प्रायः उसे मानव, पशु , पानी, वृक्ष, जल और आकाश के मिले जुले समूह के रूप मे ही तो देखेगे। परन्तु एक चित्रकार उस भुदृश्य को रेखाओ और वर्णो (रंगो) के समन्वित रूप मे ही देखेगा, एसके लिए यहु दृश्य एक महत्वपूर्ण रू**प** है जिसको **वह** रेखओ और वर्णो के पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा अभिव्यक्त करता है। वह वस्तु स्थिजि को एक महत्वपूर्ण आकृति के रूप मे देखता है और यही उसकी कला है।

कुछ मतावलम्बियो का यह कहना है कि किसी भी वस्तु को देखने की दो विधाये है–

"व्यावहारिक और कलात्मक**"** किन्तु कलात्मक दृष्टि व्यावहारिक दृष्टि से अधिक सत्य है। कला के सभी दार्शनिक इस तथ्य से सहमत है कि कलात्मक सृजन एक तात्विक उपक्रम है जो सत्ता की चरम विशेषताओ की अभिव्यक्ति है।

दार्शनिक ''डैकेस'' का मत हैकि वास्ताविक कला वह है जो हमारे भावो को अभिव्यक्त करती हो। "विरो" का मत है कि श्राव और रूप का अर्थ है ''एक विन्यास'' और विषय का अर्थ है। वह भाव अथवा विचार जो एक विन्यास विशेष मे अभिव्यक्त किया जाये, जब इन दोनो का एक सुंदर संघटन हो सके, तभी कला का प्रादुर्भव होता है।

इन पारिभाषाओ के तीन मुख्य तथ्य है।

1. प्रत्येक कला विषय और शैली का सुसंघटित समवाय है। इस कथन का यह तात्पर्य है कि यह वह समवाय है जिसका मानसिक विश्लेषण तो हो सकता है, किन्तु जिनके तत्वो का वास्ताविक विच्छेदन नही हो सकता। दूसरा तथ्य यह है कि कला का माध्यम ऐन्द्रिय होता है। कला या तो दृश्य होती है, अथ्वा श्रव्य या दोनो। ललित कला मे चित्र दृश्य है, काव्य और संगीत श्रव्य है। कितु नाटक दृश्य और श्रव्य दोनो है।
2. तीसरा तथ्य यह है कि इसके तत्व वे होते है जिनमे अभिव्यंजना शक्ति होती है और जो परस्पर संवादी गुणो से संस्लिष्ट होते है।

कला का उत्स –

अभिनव गुप्त ने अपने ग्रंथ ''ध्वन्यालोक'' के प्रारम्भिक श्लोक मे कला का मुख्य स्त्रोत इस प्रकार बताया गया है – अपूर्व यद्वस्तु प्रथयति बिना कारणकलां, जगदग्राावप्रख्यं निजरसभिरात्सारयति च।

कमात्प्रख्योप्राख्याप्रसरसुभगं भासयति तत,
सरस्वत्यास्तत्वं कविसहूदयायाख्यं विजयते।।3

कलां के तत्व – प्रख्या और उपाख्या कला के दो मुख्य तत्व प्रतिभा हौ और उपाख्या अभिव्यक्ति। इस पर कौमदी व्याख्या यह कहती है :–

द्वे वर्त्मनी गिरां देव्याः शास्त्रं च कविकर्म च।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

प्रज्ञोप्रज्ञं तपोराधं प्रतिभोदभवन्तिमम् ।। 4

उसी प्रकार वाणी के दो पंथ है "शास्त्र और काव्य" आद्या अर्थात शास्त्र प्रज्ञा के द्वारा अंतःकरण मे आप से उपजे हुए ज्ञान से प्रतिपादित होता है और अन्तिम अर्थात् काव्य प्रतिभा उत्कृष्ट मानता है।

कलात्मक अभिवृत्तिः– कोच के अनुसार

"अभिव्यक्ति ही कला**"** 5

कलात्मक अभिव्यक्ति वह है जिसमे केवल आनंद की अनुभूति होती है, कोई व्यावहारिकपक्ष से हमे प्रथक कर देती है। इसी को दार्शनिक "बुली" ने दूरीकरण की मानसिक प्रक्रिया कहा है। उसका तात्पर्य यह है कि कला अपने मनोरंजक गुणो के द्वारा विषय को हमारे व्यावहारिक लाभो और स्वार्थो से दूर कर देती हैं। यदि महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् नामक नाटक देखने मे हम अपनी प्रेयसी के व्यवहारो को सोचने लग जाते है तो हम उस क्षण नाटक का आनंद नही ले रहे है बल्कि अपने व्यक्तिगत जीवन के तथ्यो को उलट पलट रहे है। कलात्मक अभिव्यक्ति मे एक विचित्र निरपेक्षता होती है। जिसको पाश्चात्य दार्शनिको ने समान रूप से रेखांकित किया है। इसका अर्थ यह नही है कि इस अभिव्यक्ति मे अवधान होता है। निरपेक्षता का भाव केवल यही कि कलात्मक अभिवृत्ति मे किसी व्यक्तिगत व्यावहारिक आवश्यकता से सम्बध नही रहता।

कला की विशेषताये – कलाकृति केवल देखने या सुनने की वस्तु नही है। बल्कि इसमे प्रेक्षक की तल्लीनता ध्यानमग्नता होती है। भाव के माधुर्य की चवर्ण होती है। चित्र कोई रेखांकित फलक नही है। वाताविक देश वह है जिसमे वस्तुएं रखी होती है, जिसमे गति होती है। इसके विपरीत चित्रित देश वह है जिहसमे रेखाओ और वर्णो का अंगागिसंश्लिष्ट भाव विद्यमान हो। कला भैतिक द्रव्यो के माध्यम क्षरा ऐंसी सर्जना होती है, जो भौतिक द्रव्यो से अतीत होती है। आकृति मात्र कला नही होती। जब वह संवेदनशीलता से आप्लवित होती है, तभी वह कला का रूप धारण करती है। कला में एक व्यवस्थात्मकता, एक निश्चयात्मकता होती है, और उसके भिन्न भिन्न अंगो मे एक विचित्र संश्लेषण होता है।

कला की अनुभूति अपरोक्ष होती है। उसका माध्यम दृश्य या श्राव्य उसके तत्व रेखा, वर्ण स्वर, लय, शबद, छनद कुछ भी हो – किन्तु उसकी अनुभूति अपरोक्ष होती है और वह इनुभूति आहलादकारी व आनंददायक होती है। कला नानत्व मे, विविधता मे एकता की अनुभूति है। रेखाओ और वर्णो मे सामंजस्य और समानुपात और संवाद की अनुभूति कला है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार "एक अनुभूति को दूसरे तक पहुँचाना ही कला है" 6

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1 ताल वाद्या शास्त्र पृष्ठ 70
2.संगीतायन पृष्ठ 58
3.भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ 128
4.नाट्यशास्त्र पृष्ठ 65
5.संगीतायन पृष्ठ 60
6कृसंगीत चिन्तन पृष्ठ 4व